राज कॉमिक्स

संख्या 0292

खौफनाक खेल भोकाल

भोकाल सीरीज

खौफनाक खेल

● कथानक : संजय गुप्ता ● सम्पादन: मनीष चन्द्र गुप्त ● चित्रांकन: कवम स्टूडियो

महाबली फूचांग ओसाक ग्रह का बागी जिसने ओसाक ग्रह की वह रात खून से रंग दी, महाराज गार्बोच की हत्या करके –

© RAJA POCKET BOOKS

महारानी रसीया राजकुमारी सोफिया को लेकर भाग निकली।

फूचांग का क्रोध संभाले नहीं संभल रहा था—

उसे पकड़कर लाओ। उसके बिना तिलिस्मी ओलम्पाक में नहीं घुसा जा सकता। मुझे सोफिया जरूर चाहिए। जिंदा या मुर्दा।

उधर एक गुप्त स्थान पर रानी रसीया की छत्रछाया में राजकुमारी सोफिया अब जवान हो चुकी थी—

बेटी सोफिया! अब तुम इसलायक हो गई हो कि अपने पिता की हत्या का बदला ले सको।

मां! मैं फूचांग को खून से नहला दूंगी।

नहीं, अभी नहीं। अभी तुम्हें तिलिस्मी ओलम्पाक पहुंचना है। वहीं कैद है फूचांग की मौत और ओसाक ग्रह का भविष्य।

तिलिस्मी ओलम्पाक।

और वहां पहुंचने के लिए तुम्हें पृथ्वीलोक जाना पड़ेगा। महर्षि गाजोबाजो के पास। वे पृथ्वीलोक में हमारे जासूस हैं और तुम्हारे पिता के वफादार भी। तुम्हें तिलिस्मी ओलम्पाक की पूरी शिक्षा और चाबी वही देंगे।

ठीक है मां, मैं कल ही वहां के लिए प्रस्थान कर जाती हूं।

पृथ्वीलोक पर विकास नगर में महर्षि गाजोबाजो के आश्रम में

महाबली फूचांग को गाजोबाजो का प्रणाम।

गाजोबाजो! तिलिस्मी ओलम्पाक की तुम्हें पूरी जानकारी है और तुम्हें यह भी मालूम है कि...

...राजकुमारी सोफिया के बिना वहां नहीं पहुंचा जा सकता। और राजकुमारी सोफिया को वहां पहुंचने के लिए तुम्हारे पास आना ही पड़ेगा।

तो महाबली मुझसे क्या चाहते हैं?

हम चाहते हैं कि जब राजकुमारी सोफिया आपके पास पहुंचे तो आप राजकुमारी को हमें सौंप दें।

जरूर महाबली, ऐसा ही होगा।

हम विकासनगर के महाराज विकासमोहन के मेहमान हैं यहां पर।

और जब राजकुमारी सोफिया वहां पहुंची –

महर्षि गाजोबाजो को सोफिया का प्रणाम।

आओ पुत्री! स्वागत है तुम्हारा।

हमें पता है पुत्री कि तुम यहां क्यों आई हो। हम तुम्हें खुद तिलिस्मी ओलम्पाक ले चलेंगे, अभी तुम आराम करो.

जैसी आपकी इच्छा महर्षि।

और अगले दिन महर्षि गाजोबाजो अपने आश्रम से निकले।

चलो सारथि, विकास-नगर महाराज विकास-मोहन के दरबार में।

महाराज विकास मोहन का दरबार —

वाह! क्या नृत्य है? क्या नर्तकी है। महामंत्री चन्द्रमणि हमारे मित्र फूचांग के लिए मदिरा लाओ।

जरूर महाराज, जरूर मदिरा ही जीवन है। हिक हिक

तभी महर्षि गाजोबाजो ने वहां प्रवेश किया—

महाबली फूचांग व महाराज विकासमोहन को गाजो-बाजो का प्रणाम।

तुरन्त रागरंग बन्द हो गया—

प्रणाम महर्षि।

गाजोबाजो आपके लिए बेशकीमती तोहफा लाया है महाबली फूचांग!

कालीन खोलकर दिखाया जाए।

राजकुमारी सोफिया!

खिल उठा फूचांग का शैतानी चेहरा—

हम तुमसे अति प्रसन्न हुए गाजोबाजो। तुमने हमारा दिल जीत लिया। हम इसका इनाम देंगे आपको।

गाजोबाजो, बेईमान! धोखेबाज!!

हा हा हा महर्षि गाजोबाजो, अब आप जल्दी से ताबीज तैयार करें।

जो आज्ञा महाबली।

और तब महर्षि गाजोबाजो राजकुमारी सोफिया को लेकर वधशाला में पहुंचा—

राजकुमारी! अपने इष्टदेव खजूरा को याद कर लें।

गाजोबाजो! आप तो हमारे पिता के वफादार थे।

हा हा हा राजकुमारी! मेरे लिए पैसा और रुतबा जरूरी है। और वह मुझे महाबली फूचांग से मिलेगा।

गाजोबाजो! इस कुकृत्य के लिए ओसाक ग्रहवासी व इष्टदेव खजूस आपको कभी माफ नहीं करेंगे।

राजकुमारी! तिलिस्मी ओलम्पाक हमारे हाथ आने के बाद हमें किसी चीज की जरूरत नहीं रह जाएगी।

धड़ाम

और महर्षि गाजोबाजो ने राजकुमारी सोफिया की कटी गर्दन उठाई –

हा हा हा

सोफिया के तड़पते हुए जिस्म को देखा –

और उसके चेहरे को अपने हाथ से भींचकर गायब कर दिया –

फक फक

अब यह बाल और यह खून हमारे काम आएगा!

और ताबीज तैयार हो गए।

तभी महाबली फूचांग ने वहां प्रवेश किया—

महर्षि! कृपया बताएं, क्या हमारा काम हो गया है?

जी हां, महाबली! अब यह ताबीज पहन कर कोई भी महाबली, महावीर या सर्वोत्तम स्त्री पुरुष तिलिस्मी ओलम्पाक में प्रवेश कर सकता है।...

...महान खजूरा के वरदान के कारण केवल सोफिया ही तिलिस्मी ओलम्पाक में प्रवेश कर सकती थी। महान खजूरा ने उसके खून व उसके बालों में यह शक्ति भर दी थी। आप तिलिस्मी ओलम्पाक में महान खजूरा के शाप के कारण नहीं घुस सकते थे। अब आपको यह खौफनाक खेल खेलने के लिए जरूरत है संसार के सर्वोत्तम, महावीर व महाबलिष्ठ व्यक्ति की।

हां, गाजोबाजो। यह खेल होगा और बड़े जोर-शोर से होगा।

किन्तु उसी क्षण वहां महाबली फूचांग के गुप्तचर ने प्रवेश किया—

महाबली फूचांग। खबर मिली है कि सोफिया अभी जीवित है।

क्या?

लेकिन वह इस से आगे कुछ ना बोल सका—

आह ऽऽ

और जल मरा।

गरज उठा फूचांग—

महर्षि गाजोबाजो। क्या कह रहा था यह गुप्तचर और यह जल कैसे गया?

महाबली फूचांग! यह गुप्तचर वधशाला के सुरक्षा घेरे में घुस आया था, इसलिए जल मरा

...और राजकुमारी सोफिया के बारे में शायद वह जानता नहीं होगा कि उसका मैंने यहां अभी-अभी वध किया है।

हुम्म!

महर्षि गाजोबाजो! तुमने हमारी बहुत सेवा कर ली। अब इस सेवा का तुम्हें अति विशिष्ट पुरस्कार देंगे हम।

आप महान हैं महाबली!

सेवा के इनाम में फूचांग की तलवार उठी–

और गाजाबाजो की गर्दन कटकर नीचे जा पड़ी–

हा हा हा! तुझ जैसा चालबाज, चालाक बूढ़ा अब जीवित नहीं रहना चाहिए।

अब रचना पड़ेगा एक भयानक जाल। एक खौफनाक खेल।

और उसके लिए आज ही विश्व के सभी राजाओं, सम्राटों, चक्रवर्ती सम्राटों, महावीरों और महाबलिओं को न्यौता देना होगा।

विकासनगर के विशाल क्रीड़ास्थल में विश्व के बड़े-बड़े महारथी, महावीर, महाबली राजा, चक्रवर्ती सम्राट छिपकली मानव फूचांग के निमंत्रण पर एकत्र हुए।

महाबली फूचांग ने खौफनाक खेल का शुभारंभ किया—

जादूगर शूतान! तुम अपनी सम्मोहन शक्ति का प्रदर्शन करोगे! यदि तुम सफल रहे तो तुम्हें ओलम्पाक के लिए चुन लिया जाएगा!

इस प्रदर्शन में मैं आपको निराश नहीं करूंगा महान फूचांग!

क्रीड़ास्थल के बीचों-बीच पहुंचकर शूतान ने विचित्र आवाज में पुकारा—

ओ...ओ...ओ

अगले ही पल—

चिंघाड़ ss चिंघाड़ ss

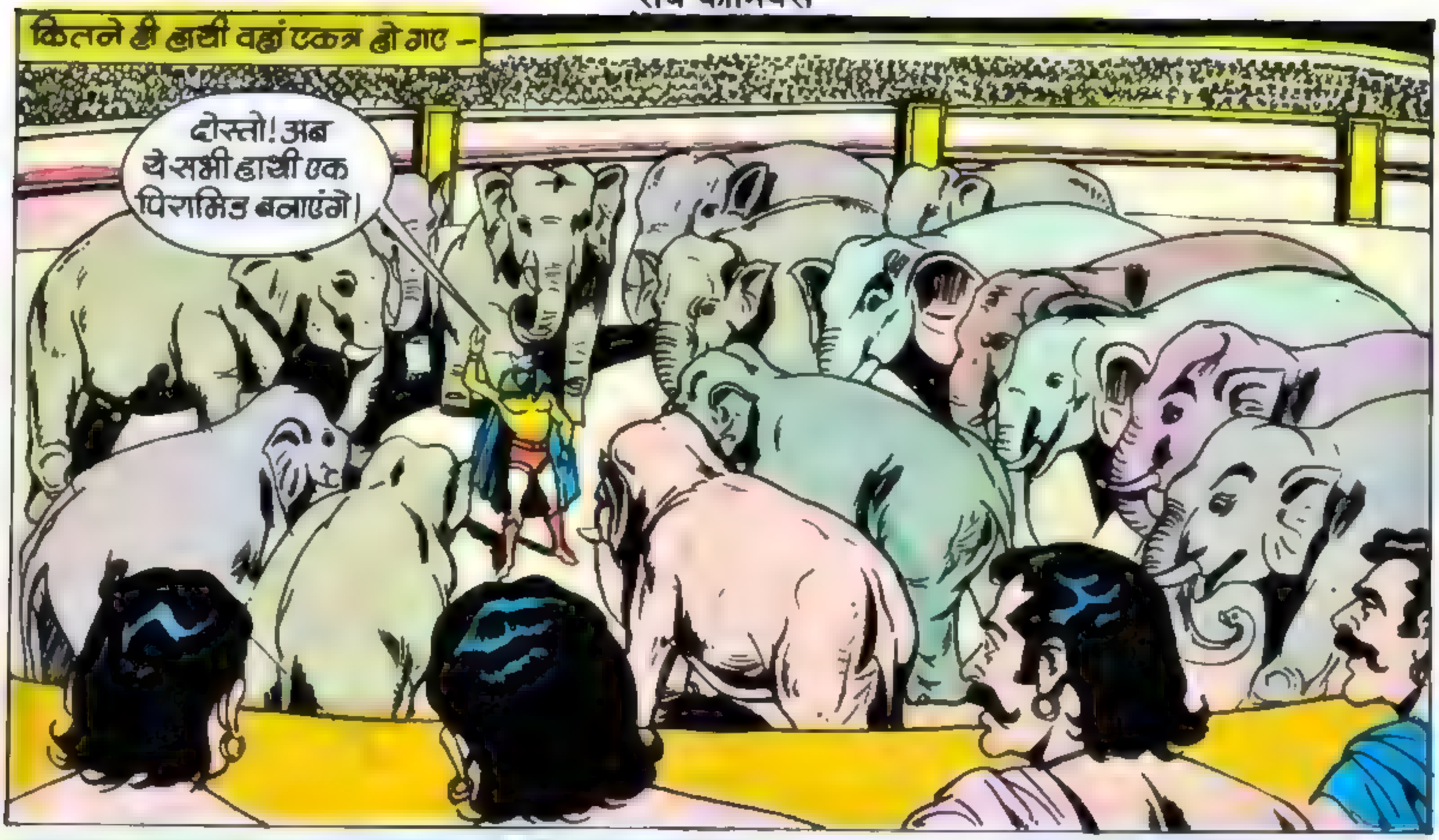
कितने ही हाथी वहां एकत्र हो गए –
दोस्तो! अब ये सभी हाथी एक पिरामिड बनाएंगे!

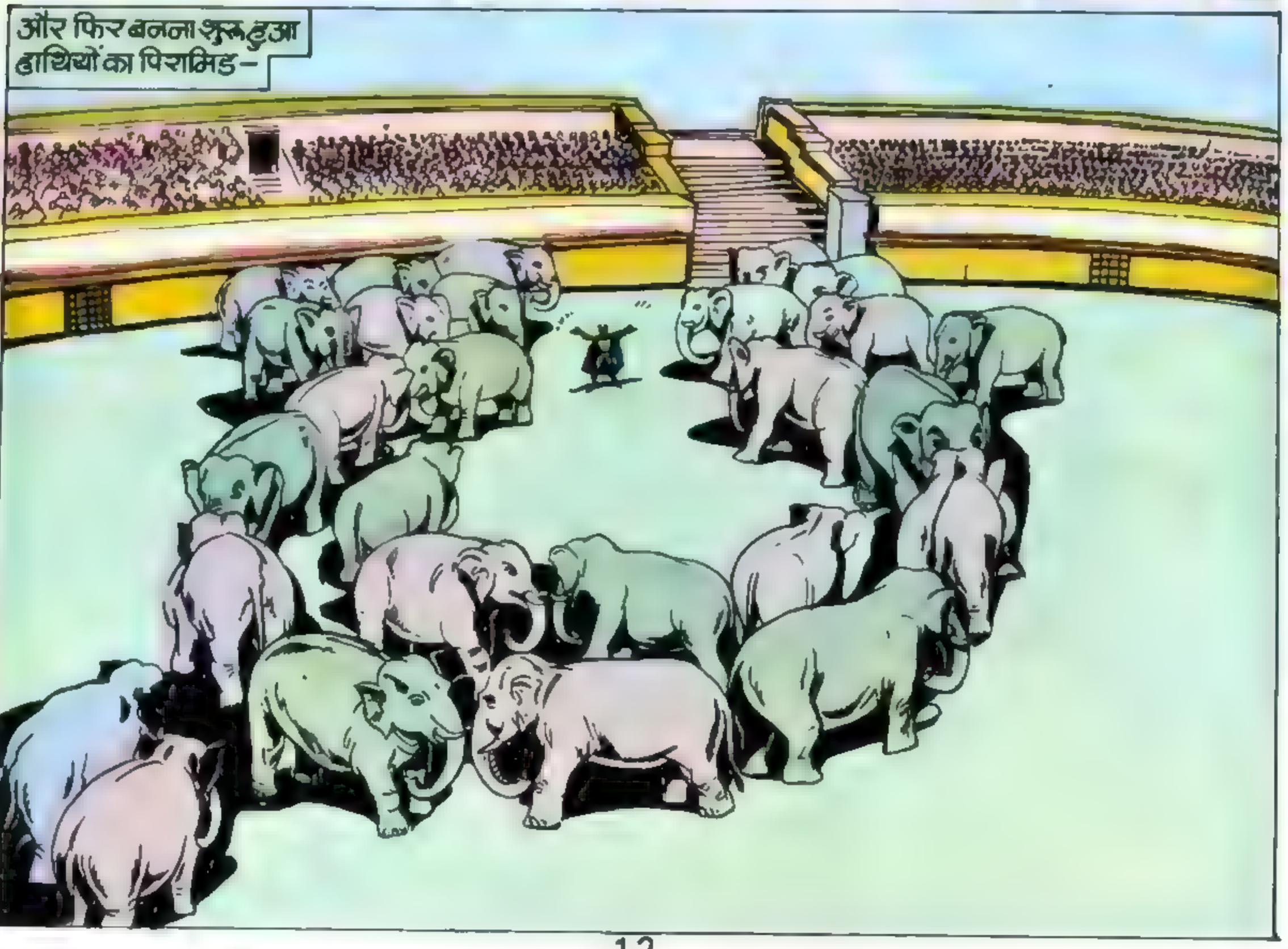
और फिर बनना शुरू हुआ हाथियों का पिरामिड –

कुछ ही देर में हाथियों का विशाल पिरामिड तैयार था—

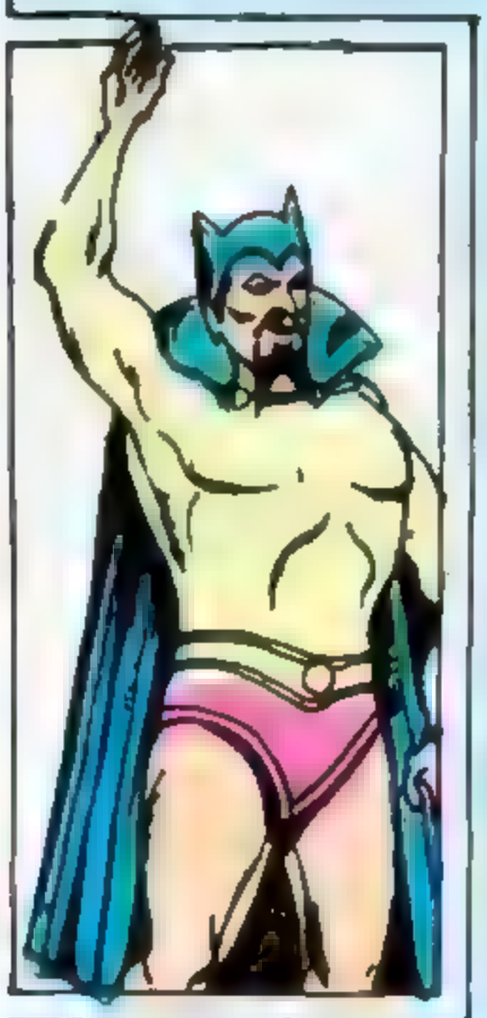

कुछ ही पल बाद जब सम्मोहन टूटा तो वहां कोई हाथी तो क्या, हाथी का बच्चा भी नहीं नजर आ रहा था-

तड़ तड़ तड़

दोस्तो! अब मैं आपको सम्मोहन शक्ति का दूसरा चमत्कार दिखाता हूं!

क्रीड़ास्थल में बैठे दर्शक केवल खुद को जीवित अनुभव करेंगे जबकि यहां बैठे सभी लोगों को निर्जीव!

अगले ही पल –

अरे! क्रीड़ास्थल में सब मरे पड़े हैं। केवल मैं ही जिंदा हूं।

यह क्या हुआ? सभी लोग कैसे मर गये? मैं बच गया।

अरे! सब मरे हुए लोग। मैं तो जीवित हूं। मुझे इनके बीच नहीं बैठना चाहिए।

इस युवती ने कितना सुंदर हार पहन रखा है। यह तो मर चुकी है, और कोई भी जीवित नहीं है। मैं इसका हार उतार लेती हूं।

उस क्रीड़ास्थल में सभी अपने को जीवित और शेष सबको निर्जीव अनुभव कर रहे थे –

भगवान की अनुकम्पा है कि मैं जीवित हूं। इतने सारे निर्जीव लोगों के बीच मेरा बच जाना महान आश्चर्य है।

कुछ देर के बाद जादूगर शूतान ने अपना सम्मोहन तोड़ा-

अरे वाह! इसने तो कमाल कर दिया।

सचमुच आश्चर्यजनक।

इस जादूगर ने तो अदभुत सम्मोहन किया है।

देश-विदेश के सम्राटों ने जादूगर शूतान की बहुत प्रशंसा की -

सचमुच महान है!

इसे ओलम्पाक में भेजना चाहिए।

ऐसा आश्चर्य तो कभी देखा, सुना नहीं।

तालियों की गूंज और दर्शकों के भारी शोर के बीच महाबली फूचांग ने घोषणा की -

दोस्तो! आपका निर्णय मुझे स्वीकार है। मैं जादूगर शूतान को ओलम्पाक के लिए चुन रहा हूं।

अब मैं विश्व के सबसे शक्तिशाली पुंस्त्व अतिक्रूर को आमंत्रित करता हूं।
अतिक्रूर...

अतिक्रूर ने दर्शकों का अभिवादन किया –

अतिक्रूर, अब तुम्हें अपनी शक्ति का, अपने बल का प्रदर्शन करना है यहां।

जरूर महाबली फूचांग!

तभी क्रीड़ास्थल की दीवार में बने दरवाजे खुलने लगे –

और_

गुर्र२ गुर्र२

एक शक्तिशाली गैंडे ने अतिक्रूर की छाती पर टक्कर मारी-

धाड़

अतिक्रूर उछलकर उसी गैंडे पर सवार हो गया-

गैंडा भयभीत होकर तेजीसे दौड़ा-

और दौड़ते-दौड़ते गैंडा बुरीतरह थककर गिर पड़ा-

तभी दो हाथी तेजी से उसकी ओर दौड़े–

चिंघाड़...चिंघाड़

अतिक्रूर ने दोनों हाथियों की सूंड पकड़ ली–

चिंघाड़...चिंघाड़

और फिर उसने हाथियों को सम्भलने का कोई अवसर नहीं दिया–

अगले ही पल दोनों हाथी जमीन पर पड़े तड़प रहे थे–

अतिक्रूर की शक्ति देखते ही बनती थी—

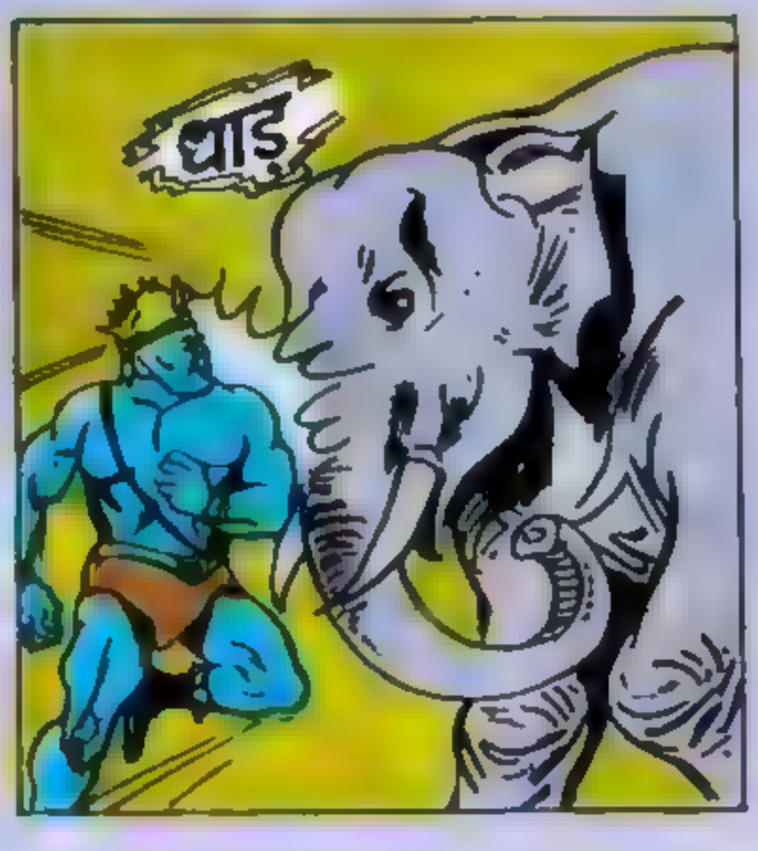

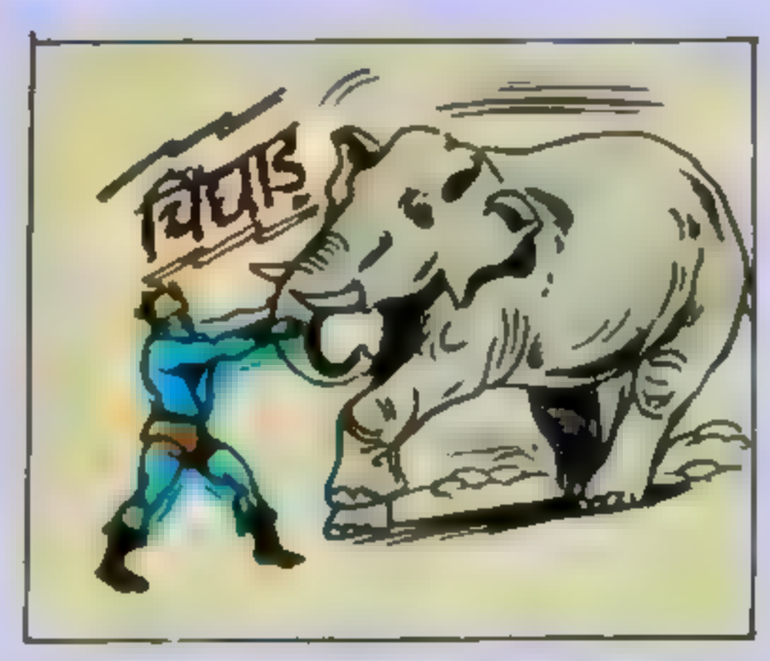

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच महाबली फूचांग ने घोषणा की—

और अतिक्रूर के जाने के बाद...

...हर दर्शक के दिमाग में एक ही तूफान था—

जाने अब कौन आएगा?

पता नहीं, क्या आश्चर्य दिखाएंगे महाबली फूचांग अब?

लेकिन इससे पहले कि उनके प्रश्नों का सही जवाब मिलता—

गड़ गड़ गड़ गड़

और सबके चेहरों पर खिंच गईं आतंक की रेखाएं—

धरती का सीना चीरकर निकला भयानक दैत्य।

किन्तु तभी एक मानव भागता हुआ उसके सामने आ गया—

और एक निष्फल-सा दुस्साहस किया उसने—

जिसने दैत्य को बुरी तरह से गुस्सा दिला दिया-

और—

दैत्य झुका—

और अगले ही क्षण चीखें निकल गईं सभी दर्शकों की। दैत्य ने मैदान की धरती का एक बड़ा टुकड़ा उखाड़कर अपने हाथों में उठा लिया —

नहींssईईsss

ओकलन

अब कुछ करना होगा!

उफ! यह अब नहीं बचेगा।

और आलोप—

राज कॉमिक्स

भोकालबन गया।

दैत्य ने विशाल धरती का टुकड़ा भोकाल पर दे मारा

और –

धरती का वह टुकड़ा रेत के कणों में बदलकर भोक्राल के चारों तरफ बिखर गया –

फिर भोकाल ने अपनी ढाल नीचे की ओर –

वह उड़ चला।

और—

आह!

बस, अब नहीं बचेगा तू।

भोकाल के वार ने दैत्य को काल का ग्रास बना दिया।

दर्शकों के शोर से सारा क्रीड़ास्थल गूंज उठा, जिसके बीच गूंज उठी फूचांग की आवाज—

ये है आलोप उर्फ भोकाल तिलिस्मी ओलम्पाक के लिए चुना गया तीसरा विजेता।

वाह!

वाह

तड़ तड़ तड़

भोकाल!

भोकाल महावीर!

महाबली फूचांग का खूंखार स्वर गूंजा-

अब मैं इन तीनों विजेताओं को तिलिस्मी ओलम्पाक भेजूंगा

तभी क्रीड़ास्थल पर एक बिजली ने प्रवेश किया-

ठहरो! मैं भी तिलिस्मी ओलम्पाक में भाग लेना चाहती हूं।

नहीं! तिलिस्मी ओलम्पाक में सर्वोत्तम, महाबली, महावीर इंसान ही भाग ले सकते हैं।

मैं किसी भी सर्वोत्तम, महाबली, महावीर से लड़ने को तैयार हूं।

नहीं, हमें चींटी को हाथी से लड़ाने में समय नहीं गंवाना।

तुम्हें चींटी को हाथी से लड़वाना ही होगा। नहीं तो तुम मुझसे मुकाबले के लिए तैयार हो जाओ।

फ्यांग ने मुस्कराकर दो बार ताली बजाई और –

तड़ तड़

दोनों भयानक अंदाज में तुरीन की तरफ बढ़े –

तभी एक बिजली सी कौंधी –

कड़ क...इ-कड़ाक

चल कपाला!

कपाला उछली और –

आह!

शाबास कपाला!

क्या बला थी वह ?

कपाला ने फिर छलांग लगाई, किन्तु इसबार वह फंस गई —

म्याऊं

दूसरे राक्षस ने भी तब तक जंजीर वाला गोला प्राप्त कर लिया था

उफ!

झर्र र्र

दोनों राक्षस उन्हें लिये आकाश में उड़ चले —

हा हा हा हमसे क्या खाकर लड़ने आई थी बालिका!

उंह

क्रीड़ास्थल के शांत वातावरण में गूंज उठी फूचांग की हड्डियों को जमा देने वाली खौफनाक हंसी —

हा हा हा चींटी और हाथी का मुकाबला!

किन्तु-

तभी दोनों राक्षसों की चीखों से कांप उठा आकाश —

आह ss

धड़

आह ss

दोनों राक्षस कंकालों में बदल गये

म्याऊं

चल कपाला! फूचांग के पास।

और उस बला का यह करतब देख क्रीड़ास्थल में बैठा हर दर्शक स्तब्ध था—

फूचांग के सामने गुर्रा उठी तुरीन--

अब बोलो! भेजोगे ना मुझे 'तिलिस्मी ओलम्पाक' में।

हां,हां, जरूर।

इस निर्णय से सभी दर्शकों में हर्ष की लहर छा गई -

तड़ तड़ पड़ पड़

और कुछ ही देर बाद चारों विजेता वहां मौजूद थे –

अब मैं आप चारों को तिलिस्मी ओलम्पाक भेज रहा हूं। वहां क्या करना है इसकी जानकारी आपको महावीर भोकाल वहां जाकर देंगे।

हम तैयार हैं।

फूचांग ने चारों को एक-एक ताबीज दिया –

इन ताबीजों को आप चारों पहन लें। यह अभिमंत्रित ताबीज हैं। इनके बिना आपकी शक्तियां वहां खत्म हो जाएंगी। मतलब यह कि इन्हें आपको हरगिज नहीं त्यागना!

और फिर वे चारों वहां से गायब हो गए –

और तब गूंज उठी फूचांग की आवाज –

पृथ्वी के राजाओ, महाराजाओ, चक्रवर्ती सम्राटो, इस क्रीड़ास्थल से यह खेल अब समाप्त हुआ। अब आप अपने-अपने देशों में पहुंचकर भी तिलिस्मी ओलम्पाक में हो रहे चारों वीरों के खेल का आनंद ले सकते हैं, किन्तु...

...उसके लिए आपको मुझे अपने-अपने देशों की आय का आधा हिस्सा देना होगा। ये जादुई दूर-दर्शन दर्पण...

... आपको तिलिस्मी ओलम्पाक के सभी दृश्य दिखाएंगे। मेरा वादा है कि आपका ऐसा मनोरंजन कभी ना हुआ होगा ना कभी हजारों साल तक किसी का होगा।
हम सब तैयार हैं!
हमें यह दूरदर्शन दर्पण चाहिए।
और हम आगे भी तिलिस्मी ओलम्पाक में और वीरों को भेजते रहेंगे।

पाठको, आपके दिमाग ने इस अद्भुत कथानक से खूब कुश्ती लड़ी, अब आपके दिमाग में कुछ प्रश्न होंगे, जैसे :-

- महारानी रसीया का क्या हुआ ?
- राजकुमारी सोफिया के कत्ल कैसे हुआ ?
- क्या था तिलिस्मी ओलम्पाक ?
- आलोप, अतिक्रूर, तुरीन व थूतान कौन थे ?
- तिलिस्मी ओलम्पाक में क्या हुआ ?
- तिलिस्मी ओलम्पाक से फूचांग क्या चाहता था ?
- आलोप के भोकाल बनने का क्या रहस्य था ?
- इन सब प्रश्नों के जवाब आपको मिलेंगे ...

'तिलिस्मी ओलम्पाक' ...में।

चित्रकथा आपको कैसी लगी, इसके बारें में लिखें:
संजय गुप्ता, : 03-दरीबा कलां, दिल्ली-110006

समाप्त

मुद्रक : जापान आर्ट प्रैस